नजीर अकबराबादी

(1 से 4 'रोटिया' शीर्षक कविता से तथा 5 'चपाती' शीर्षक कविता से)

जिस जा[1] पे हांडी[2], चूल्हा तवा और तनूर[3] है।
खालिक[4] की कुदरतों[5] का उसी जा जहूर[6] है।।
चूल्हे के आगे आंच जो जलती हुजूर है।
जितने हैं नूर[7] सब में यही ख़ास नूर है।।
इस नूर के सबब[8] नज़र आती हैं रोटियां।।1।।

आवे तवे तनूर का जिस जा जुबां पे नाम।
या चक्की चूल्हे के जहां गुलज़ार[9] हो तमाम[10]।।
वां सर झुका के कीजे दंडवत[11] और सलाम।
इस वास्ते कि ख़ास यह रोटी के हैं मुकाम[12]।।
पहले इन्हीं मकानों में आती हैं रोटियां।।2।।

रोटी न पेट में हो तो फिर कुछ जतन[13] न हो।
मेले की सैर ख्वाहिषे[14] बागो चमन[15] न हो।।
भूके गरीब दिल की खुदा से लगन[16] न हो।
सच है कहा किसी ने कि भूके भजन न हो।।
अल्लाह की भी याद दिलाती हैं रोटियां।।3।।

कपड़े किसी के लाल हैं रोटी के वास्ते।
लंबे किसी के बाल हैं रोटी के वास्ते।।
बांधे कोई रुमाल हैं रोटी के वास्ते।।

1. स्थान, जगह 2. बटलोई की आकृति वाला मिट्टी का बरतन 3. तंदूर 4. सृष्टिकर्ता, ईश्वर 5. प्रकृति, सामर्थ्य 6. अभिव्यक्ति, प्रकाश 7. रोशनी, प्रकाश 8. कारण 9. उद्यान, वह स्थान जहाँ खूब चहल-पहल हो 10. सारा 11. साष्टांग प्रणाम 12. देर तक ठहराव 13. उपाय 14. इच्छा 15. उद्यान 16. प्रेम, धुन

सब कश्फ़[17] और कमाल हैं रोटी के वास्ते।।
जितने हैं रूप सब यह दिखाती हैं रोटियां।।4।।

पेट में रोटी पड़ी, जब तक तो यारो ख़ैर[18] है।
गर न हो फिर ग़ैर[19] का अपने ही जी से बैर है।।
खाते ही दो तर[20] निवाले[21] आसमां पर पैर है।
आसमां क्या, फिर तो ख़ासे[22], ला मका[23] की सैर है।।
दो चपाती के वरक[24] में, सब वरक रोशन हुए।।
एक रकाबी[25] में हमें, चौदह तबक[26] रोशन हुए।।5।।

17.जाहिर होना, प्रकट होना 18. खैरियत, कुशल 19. दूसरा, बेगाना 20. घी आदि से चुपड़ा हुआ 21. ग्रास, कौर 22. विशेष 23. अनंत, ईश्वर, अरब का प्रसिद्ध नगर जो मुसलमानों का तीर्थस्थर है 24. पत्ता, पन्ना 25. एक प्रकार की छिछली छोटी थाली 26. चांदी सोने के पत्तरों का बेलकर या पीटकर कागज की तरह बनाया हुआ पतला वरक